Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 964–970

FOUR-YEAR INTEGRATED TEACHER EDUCATION PROGRAMME PROPOSED BY NATIONAL EDUCATION POLICY 2020: AN ANALYTICAL STUDY

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Praveen Kumar Surjan [1], Virender Kumar Chandoria [2], Pooja Singh [3]

[1] Assistant Professor, Department of Education and Training, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
[2] Assistant Professor, Department of Education, University of Allahabad (Central University), Prayagraj, Uttar Pradesh, India
[3] Assistant Professor, College of Teacher Education, Nuh, Haryana, Department of Education and Training, Maulana Azad National Urdu University (Central University), Telangana, India

ABSTRACT

English: The National Education Policy 2020 of India marks a significant shift in the way we view and understand teacher education. The study reflects the need for high-quality, multidisciplinary and holistic teaching-training, with a special emphasis on the need for high-quality, multidisciplinary and holistic teaching-training. The cornerstone of this reform in the Indian education system is the introduction of the Integrated Teacher Education Programme (ITEP). The present study explores the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) and analyses its objectives, features, structure and potential impact on the Indian education system. The aim of the ITEP is to enhance teacher quality by integrating broad subject knowledge with pedagogical skills, thereby producing teachers who are well equipped to meet the diverse needs of contemporary classrooms. The present study outlines the key components of the Integrated Teacher Education Programme, which includes a strong curriculum that combines content knowledge, elective courses and professional education elements. Practical training through internships and teaching practicums forms an important part of the programme, bridging the gap between theoretical knowledge and classroom application. The programme emphasises continuous assessment and professional development to ensure continuous improvement and adaptation of teaching methods and techniques. The potential impact of ITEP is significant, as it appears committed to improving teaching effectiveness, promoting inclusive education, and fostering innovative pedagogical approaches. By standardizing teacher education and setting common quality benchmarks, ITEP aims to eliminate inequities and enhance the overall quality of education across India. The program also focuses on preparing teachers to leverage educational technology, adopt experiential learning methods, and implement inclusive education practices, thus aligning with the broader goals of the National Education Policy 2020. However, the presented study also identifies several challenges in the implementation of ITEP which are discussed in detail in the study.

Hindi: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक-शिक्षा को देखने और समझने के संबंध में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है, जिसमें उच्च-गुणवत्ता, बहु-विषयक और समग्र शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में इस सुधार की आधारशिला एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) की शुरूआत है। इसी क्रम में प्रस्तुत अध्ययन एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) का अन्वेषन करता है और इसके उद्देश्यों, विशेषताओं, संरचना और भारतीय शिक्षा प्रणाली पर संभावित प्रभाव का विश्लेषण करता है। आईटीईपी का उद्देश्य व्यापक विषय ज्ञान को शैक्षणिक कौशल के साथ एकीकृत करके शिक्षक की गुणवत्ता को बढ़ाना है, जिससे ऐसे शिक्षक तैयार हों जो समकालीन कक्षाओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों। प्रस्तुत अध्ययन एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के मुख्य घटकों की रूपरेखा तैयार करता है, जिसमें एक मजबूत पाठ्यक्रम शामिल है जो सामग्री ज्ञान,

Corresponding Author

Praveen Kumar Surjan,
praveen.edu2010@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.2718

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

वैकल्पिक पाठ्यक्रम और व्यावसायिक शिक्षा तत्वों को जोड़ता है। यह कार्यक्रम इंटर्नशिप और शिक्षण प्रैक्टिकम के माध्यम से व्यावहारिक प्रशिक्षण, कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है, जो सैद्धांतिक ज्ञान और कक्षा अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटता है। यह कार्यक्रम शिक्षण विधि एवं प्रविधियों के निरंतर सुधार और अनुकूलन को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर मूल्यांकन और व्यावसायिक विकास पर जोर देता है। आईटीईपी का संभावित प्रभाव महत्वपूर्ण है, जो शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार, समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने और नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने ने के लिए प्रतिबद्ध दिखता है। शिक्षक शिक्षा को मानकीकृत करके और सामान्य गुणवत्ता मानक स्थापित करके, आईटीईपी का उद्देश्य असमानताओं को दूर करना और पूरे भारत में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाना है। यह कार्यक्रम शिक्षकों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, अनुभवात्मक शिक्षण विधियों को अपनाने और समावेशी शिक्षा प्रथाओं को लागू करने के लिए तैयार करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है, इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखित करता है। हालांकि, प्रस्तुत अध्ययन आईटीईपी के कार्यान्वयन में कई चुनौतियों की भी पहचान करता है जिनकी चर्चा अध्ययन में विस्तार से की गयी है।

1. प्रस्तावना

शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य ऐसे अच्छे इन्सानों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचिलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मकता कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इसका उद्देश्य ऐसे रचनाशील लोगों को तैयार करना है जो भारतीय संविधान द्वारा परिकल्पित 'समावेशी और बहुलतावादी' समाज के निर्माण में उत्कृष्ट पद्धति से योगदान कर सकें। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)

भारत सरकार द्वारा लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, देश के शैक्षिक सुधारों में एक बड़ा कदम है, जिसका लक्ष्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर क्रांति लाना है। NEP 2020 शिक्षकों के पेशेवर विकास को प्राथमिकता देता है और अगली पीढ़ी को ढालने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करता है। इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) का कार्यान्वयन है, जिसका उद्देश्य शिक्षक शिक्षा की क्षमता और प्रभावकारिता में सुधार करना है। यह उद्देश्य बड़ी ही सरलता से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल भाव को स्पष्ट कर देता है । इससे पता चलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह चिन्हित करती है कि बिना सशक्त शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नवाचार एवं सृजनात्मकता की कल्पना करना व्यर्थ है । चूँकि शिक्षक किसी भी शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ होते हैं इसलिए अगर हमें शिक्षा व्यवस्था में मूलभूत सुधार करने है तो सर्वप्रथम शिक्षकों के शिक्षण-प्रशिक्षण में एक प्रकार के नवाचार को स्वीकार करना होगा। हालाँकि यह कार्य इतना सरल नहीं है जितना प्रथम दृष्टया दिखता है चूँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह स्वीकार करती है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था बहुत सारी चुनौतियों से जूझ रही है। इन चुनौतियों में एक बड़ी चुनौती एक प्रभावशाली शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम का अभाव है। जब हम इन चुनौतियों का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इसकी सबसे बड़ी चुनौती एक प्रकार की लक्ष्यहीनता है जो प्रगतिशीलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा के रूप में परिलक्षित होती है। परंतु शिक्षा नीति यह भी मानती है कि कठिन प्रयास से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को प्रगतिशील, अनुकूलनीय, अन्त:विषय, प्रोद्योगिकी-आधारित और कौशल-केन्द्रित व्यवस्था में बदला जा सकता है। इसी क्रम प्रस्तुत पर्चा भारतीय शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम की विशेषताओं और अंतरसंबंधों को विश्लेषण करता है जिससे इन मुद्दों को अधिक गहराई से समझा जा सके।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत के शैक्षिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से नया रूप देना है। यह नीति पूर्ववर्ती राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 का स्थान लेती है, और इसका उद्देश्य प्रारंभिक बचपन, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण सहित सभी शैक्षिक स्तरों पर व्यापक सुधारों को लागू करना है। प्रस्तुत अध्याय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल तत्वों, इसके संभावित प्रभावों और इसके क्रियान्वयन से जुड़ी कठिनाइयों का गहन विश्लेषण प्रदान करता है। निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताओं को समझ सकते हैं : -

1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताओं में प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पर ध्यान केंद्रित करना प्रमुख रूप से सम्मिलित है। एनईपी 2020 सीखने और विकास के मूलभूत पहलू के रूप में प्रारंभिक बचपन शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालता है। नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के लिए एक मजबूत ढांचा स्थापित करने के लिए प्राथमिक विद्यालयों के साथ पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को विलय करने का सुझाव दिया गया है, जिसमें संज्ञानात्मक, भाषाई, सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक आयामों को शामिल करते हुए व्यापक विकास पर जोर दिया गया है ।

2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के लिए एक लचीले और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देती है, जो पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में इसकी विशिष्ट विशेषताओं में से एक है। शिक्षा नीति आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए पाठ्यचर्या सामग्री में कमी को प्रोत्साहित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्पष्ट रूप से मानती है कि कला, खेल और व्यावसायिक कौशल को शिक्षा में सम्मिलित करना अतिआवश्यक है चूंकि अनुभवात्मक शिक्षा का उपयोग शिक्षा की सहभागिता और प्रयोज्यता को बढ़ाने का प्रयास करता है ।
3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य उच्च शिक्षा स्तर पर एक समग्र अंत:विषय शिक्षा को बढ़ावा देना है। यह विद्यार्थियों को अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों से विषयों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे एक व्यापक ज्ञान आधार तैयार होता है। शिक्षा नीति का उद्देश्य उच्च शिक्षा के व्यापक, अंत:विषय संस्थानों का निर्माण करना है जो व्यापक और अनुकूलनीय शिक्षा को बढ़ावा देने में सक्षम हों।
4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों के महत्व को स्वीकार करती है और शिक्षक-शिक्षा और व्यावसायिक विकास में पर्याप्त बदलाव का सुझाव देती है। अपनी रूपरेखा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह स्पष्ट करती है कि 2030 तक, प्रशिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता के रूप में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री की आवश्यकता होगी। शिक्षा नीति निरंतर व्यावसायिक विकास और शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (NPST) के कार्यान्वयन के महत्व पर भी जोर देती है।
5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) जैसी पहलों के माध्यम से शिक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करने पर जोर देती है। NETF शिक्षा में सीखने, मूल्यांकन, योजना और प्रशासन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जा सकता है, इस पर विचारों को साझा करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा।
6) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हाशिए पर स्थित समुदायों के बीच पहुँच, भागीदारी और सीखने की उपलब्धियों में असमानताओं को कम करने पर ध्यान केंद्रित करके समानता और समावेश को प्राथमिकता देती है। शिक्षा मंत्रालय (2020) ने विशेष शैक्षिक क्षेत्रों (एसईजेड) और एक जेंडर-समावेश निधि की स्थापना की सिफारिश की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों को पर्याप्त सहायता मिले।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के संभावित परिणाम

प्रत्येक नीति अपने उद्देश्यों के संबंध में संभावित सकारात्मक परिणामों की अपेक्षाओं पर खड़ी होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख उद्देश्यों का विश्लेषण करने के बाद इसके संभावित परिणामों के संबंध में हम कुछ तार्किक भविष्यवाणी की जा सकती है जो निम्नलिखित हैं : -

1) व्यापक विकास, विश्लेषणात्मक तर्क और व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से शिक्षा की क्षमता में काफी वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे यह समकालीन समाज की मांगों के लिए अधिक उपयुक्त हो जाएगी। इसका परिणाम ऐसे स्नातकों का उत्पादन हो सकता है जो अपनी क्षमताओं में बेहतर ढंग से सुसज्जित और अधिक लचीले हैं (ऐथल और ऐथल, 2020)।
2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निष्पक्षता और समावेशिता पर दिया गया जोर, विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) जैसे उपायों के साथ, हाशिए पर रहने वाली आबादी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की उपलब्धता को बढ़ाने की उम्मीद है, जिससे शैक्षिक असमानताएँ कम होंगी और सामाजिक निष्पक्षता को बढ़ावा मिलेगा (जैन, 2021)।
3) शिक्षक-शिक्षा सुधारों के कार्यान्वयन और व्यावसायिक विकास को प्राथमिकता देने से प्रशिक्षकों की दक्षता में वृद्धि होने की उम्मीद है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सुधार होगा। एनपीएसटी शिक्षकों के मूल्यांकन और उनके प्रदर्शन के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराने के लिए एक पारदर्शी संरचना स्थापित करेगा (चक्रवर्ती और जयकृष्णन, 2020)।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कार्यान्वयन चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अनुशंसित महत्वाकांक्षी सुधारों को लागू करने में मुख्य चुनौतियों में से एक संसाधनों का आवंटन है, क्योंकि इसके लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय निवेश की आवश्यकता होती है। बुनियादी ढांचे के विकास, शिक्षकों के प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी के एकीकरण के लिए पर्याप्त वित्तपोषण हासिल करना एक बड़ी बाधा बनी हुई है, खासकर ग्रामीण और आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में (भगत और झा, 2020)। नए शिक्षक-शिक्षा ढांचे और निरंतर व्यावसायिक विकास को लागू करने के लिए मौजूदा संस्थानों और प्रक्रियाओं का एक व्यवस्थित पुनर्गठन आवश्यक है। एक निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर पर्याप्त मात्रा में सक्षम शिक्षकों को प्राप्त करना और उन्हें निर्देश देना एक चुनौती है।

5. एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी): एक परिचय

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अंतर्गत एक प्रमुख उपक्रम है, जिसका उद्देश्य राष्ट्र में शिक्षक शिक्षा में क्रांति लाना है। आईटीईपी को विशेष रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मजबूत और व्यापक पद्धति स्थापित करने के लिए बनाया गया है, जिसमें विषय ज्ञान और शिक्षण कौशल दोनों को मिलाया जाता है। अध्याय का यह भाग आईटीईपी के उद्देश्यों, रूपरेखा और संभावित प्रभाव के साथ-साथ इसके प्रभावी निष्पादन के लिए कठिनाइयों और युक्तियों की जांच करता है।

1) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य विषय वस्तु, शिक्षाशास्त्र, प्रौद्योगिकी एकीकरण और समावेशी शिक्षा विधियों में विशेषज्ञता विकसित करके समग्र शिक्षक विकास को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम का उद्देश्य बहुमुखी शिक्षकों को विकसित करना है जो विभिन्न कक्षा संदर्भों में प्रभावी रूप से समायोजित हो सकें और विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा कर सकें (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। पाठ्यक्रम एक बहु-विषयक शिक्षा को प्राथमिकता देता है, जिससे शिक्षक उम्मीदवारों को विविध विषयों में ज्ञान और क्षमताएँ प्राप्त करने में मदद मिलती है। इस पद्धति का उद्देश्य आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और विभिन्न विषयों के बीच अंतर्संबंधों की व्यापक समझ के विकास को बढ़ावा देना है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। एकीकृत शिक्षा कार्यक्रम के कुछ अन्य प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं : -
2) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम देश भर में मानकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करके सभी शिक्षकों के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण की गारंटी देना चाहता है। इस पहल का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों के लिए समान मानदंड और मानक विकसित करना है, ताकि शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में एकरूपता सुनिश्चित हो सके (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2020)।
3) आईटीईपी की संरचना चार साल की अवधि परिसीमित है, जिसके दौरान स्नातक अध्ययन को शिक्षक प्रशिक्षण के साथ जोड़ा जाता है। यह ढांचा विषय वस्तु और शिक्षण विधियों दोनों की गहन जांच की सुविधा प्रदान करता है, जो शिक्षक बनने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करता है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।
4) आईटीईपी के पाठ्यक्रम में मौलिक विषय, वैकल्पिक पाठ्यक्रम और व्यावसायिक शिक्षा पर केंद्रित घटक शामिल हैं। मुख्य विषयों में मौलिक सामग्री ज्ञान शामिल है, जबकि वैकल्पिक पाठ्यक्रम विशेष शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और मार्गदर्शन और परामर्श जैसे विशेष क्षेत्रों में केंद्रित अध्ययन का अवसर प्रदान करते हैं। व्यावसायिक शिक्षा घटक में शिक्षणशास्त्र, कक्षा प्रबंधन, शैक्षिक मनोविज्ञान और मूल्यांकन विधियों पर पाठ्यक्रम शामिल हैं (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, 2020) ।
5) व्यावहारिक प्रशिक्षण इस शिक्षा कार्यक्रम का एक अनिवार्य घटक है। पाठ्यक्रम में व्यापक फील्डवर्क, इंटर्नशिप और शिक्षण अभ्यास सम्मिलित हैं, जो आवेदकों को प्रामाणिक कक्षा वातावरण में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में सक्षम बनाते है। इस व्यावहारिक प्रदर्शन का उद्देश्य शैक्षणिक ज्ञान और कक्षा अनुप्रयोग (शिक्षा मंत्रालय, 2020) के बीच की खाई को कम करना है।
6) यह शिक्षा कार्यक्रम शिक्षक उम्मीदवारों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए सतत एवं समग्र मूल्यांकन की एक प्रणाली का उपयोग करता है। इसमें प्रारंभिक परीक्षाएँ, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट और मेंटर और पर्यवेक्षकों द्वारा प्रदान की गई प्रतिक्रिया शामिल है। सतत मूल्यांकन यह गारंटी देता है कि उम्मीदवारों को पूरे कार्यक्रम के दौरान निर्बाध सहायता और दिशा मिलती है (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, 2020)।
7) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा दिए जाने वाले व्यापक प्रशिक्षण से भारत में शिक्षकों की क्षमता में काफी वृद्धि होने की उम्मीद है। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को विषय वस्तु और शिक्षण विधियों दोनों की व्यापक समझ प्रदान करके शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को बढ़ाना है (ऐथल और ऐथल, 2020)।
8) कुशल शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस शिक्षा कार्यक्रम में उल्लेखित व्यापक विकास, विश्लेषणात्मक तर्क और व्यावहारिक दक्षताओं पर जोर छात्रों के लिए अधिक विसर्जित और कुशल शैक्षिक सेटिंग की स्थापना में योगदान दे सकता है, जिससे बढ़ी हुई शैक्षणिक उपलब्धि और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिलता है (भगत और झा, 2020)।
9) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य सख्त मानकों को लागू करके और गहन प्रशिक्षण प्रदान करके शिक्षण को पेशेवर स्तर तक बढ़ाना है। इसे लागू करने से शिक्षण पेशे की प्रतिष्ठा बढ़ सकती है, इस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अधिक संख्या में उच्च कुशल व्यक्तियों को आकर्षित किया जा सकता है और उच्च शिक्षक टर्नओवर दरों की समस्या को कम किया जा सकता है (चक्रवर्ती और जयकृष्णन, 2020)।
10) यह शिक्षा कार्यक्रम समावेशी शिक्षा पद्धतियों पर निर्देश प्रदान करता है, शिक्षकों को विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए तैयार करता है, जिसमें दिव्यांग व्यक्ति और हाशिए के समुदायों से आने वाले लोग सम्मिलित हैं। इस दृष्टिकोण को लागू करने से शिक्षा के क्षेत्र में निष्पक्षता और एकीकरण को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रत्येक छात्र को उच्च गुणवत्ता वाले सीखने के अनुभवों में शामिल होने का समान अवसर प्रदान किया जाता है (जैन, 2021)।

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की कार्यान्वयन चुनौतियाँ:

ITEP के सफल कार्यान्वयन में बुनियादी ढाँचे और संसाधनों में महत्वपूर्ण निवेश शामिल है, जैसे कि पर्याप्त रूप से सुसज्जित शिक्षक शिक्षा संस्थान, उच्च शिक्षित कर्मचारी और शिक्षण सामग्री और प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता। सभी संस्थानों को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने का कार्य एक प्रमुख चिंता का विषय है (सरकार, 2020)। इसी के साथ एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के साथ कुछ निम्नलिखित चुनौतियाँ जुड़ी हुई हैं : -

1) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावशीलता अत्यधिक कुशल संकाय सदस्यों पर निर्भर करती है जो कार्यक्रम के विविध पाठ्यक्रम को कुशलता से पढ़ा सकते हैं। निर्देश और प्रशिक्षण के अनुकरणीय स्तरों को बनाए रखने के लिए संकाय सदस्यों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास और सहायता सुनिश्चित करना आवश्यक है। (मेहता और कपूर, 2020)।
2) विभिन्न संस्थानों में इस शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता और एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए मजबूत विनियमन और मान्यता प्रक्रियाओं को लागू करना महत्वपूर्ण है। इसमें स्पष्ट मानदंडों की स्थापना, आवधिक मूल्यांकन का कार्यान्वयन और निरंतर वृद्धि के लिए सहायता का प्रावधान शामिल है (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2020)।
3) शिक्षक शिक्षा के एक नए, एकीकृत मॉडल में संक्रमण के दौरान परिवर्तन का प्रतिरोध उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि मौजूदा संस्थान, शिक्षक और हितधारक परिवर्तन को अपनाने में संकोच कर सकते हैं। विरोध को कम करने और निर्बाध संक्रमण सुनिश्चित करने के लिए, चिंताओं को दूर करना, स्पष्ट संचार बनाए रखना और कार्यान्वयन प्रक्रिया में हितधारकों को सक्रिय रूप से शामिल करना महत्वपूर्ण है (मुरलीधरन, 2020)।

6. एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की कार्यान्वयन चुनौतियाँ से निपटने की रणनीतियाँ

भारत जैसे विशाल एवं विविधता भरे में देश में किसी भी नीति अथवा कार्यक्रम का कार्यान्वयन एक जटिल एवं उलझा हुआ कार्य है । कार्यक्रम कितना भी सटीक एवं बारीकी से बना क्यों न हो , सभी लोगों तक उसके लाभ को पहुँचा पाना एक जटिलता भरा कार्य है । यह जटिलता तब अधिक बढ़ जाती है जब देश में शिक्षा से जुड़ी समस्याएँ बहुत गहरी से सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में अपनी जड़े जमा चुकी हों । एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा के संबंध एक अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है परंतु फिर भी इसके समक्ष कुछ चुनौतियों आ रही हैं या आने की संभावना है । इन चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ प्रभावशाली रणनीतियों के साथ कार्य करना आवश्यक है। जिनमे से कुछ की चर्चा निम्नलिखित विमर्श में की गयी है : -

1) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए इसके कार्यान्वयन में शिक्षक-शिक्षा संस्थानों, संकाय, विद्यार्थियों, नीति निर्माताओं और समुदाय जैसे सभी संबंधित पक्षों को सम्मिलित करना आवश्यक है। साझा प्रयास और पारदर्शी संवाद कार्यक्रम के लिए समझौते और समर्थन की स्थापना की सुविधा प्रदान कर सकते हैं (भगत और झा, 2020)।
2) शिक्षक-शिक्षा संस्थानों और संकाय में निवेश करने की बात आती है तो क्षमता निर्माण महत्वपूर्ण है। इसमें संस्थानों को नए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक पद्धतियों के साथ समायोजित करने में सहायता करने के लिए प्रशिक्षण, संसाधन और सहायता का प्रावधान शामिल है (चक्रवर्ती और जयकृष्णन, 2020)।
3) एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन की प्रगति को निरंतर ट्रैक करने, समस्याओं की पहचान करने और आवश्यक समायोजन करने के लिए निगरानी और मूल्यांकन अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। निगरानी और मूल्यांकन के लिए एक मजबूत प्रणाली स्थापित करने से इन प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में मदद मिलती है। विशेषज्ञों से लगातार प्रतिक्रियाएँ और लगातार मूल्यांकन यह गारंटी दे सकते हैं कि कार्यक्रम अपनी प्रभावकारिता और प्रासंगिकता बनाए रखता है (ऐथल और ऐथल, 2020)।
4) यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस कार्यक्रम के पास पर्याप्त वित्तीय सहायता और संसाधन हों , फंडिंग और संसाधन आवंटन बहुत महत्वपूर्ण हैं। सरकारों, शैक्षणिक संस्थानों और अन्य हितधारकों के लिए कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षक शिक्षा में निवेश को सर्वोच्च प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है (मेहता और कपूर, 2020)।

एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम भारत में शिक्षक-शिक्षा में मूलभूत सुधारों के संदर्भ में एक क्रांतिकारी पहल है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है। यह कार्यक्रम समग्र विकास, बहु-विषयक शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करके प्रशिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने और छात्र सीखने के परिणामों को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। हालाँकि इसके क्रियान्वयन में उल्लेखनीय बाधाएँ हैं । सभी हितधारकों को सम्मिलित करने, क्षमताओं को बढ़ाने, प्रगति की निगरानी करने और यथोचित संसाधनों को उपलब्ध करने में रणनीतिक पहल इस बाधाओं से निपटने में योगदान दे सकती हैं। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने से भारत में अधिक कुशल, समावेशी और पेशेवर शिक्षण कार्यबल विकसित हो सकता है, जो अंततः शैक्षिक सुधार और विकास के बड़े उद्देश्यों का समर्थन करता है।

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के अंतरसंबंध

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का प्राथमिक उद्देश्य 21वीं सदी की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक क्रांति लाना है। एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) इस परिवर्तन का एक प्रमुख घटक है। इसका उद्देश्य व्यापक और बहु-विषयक ढांचे के भीतर विषय-वस्तु ज्ञान और शैक्षणिक कौशल को मिलाकर शिक्षक शिक्षा में क्रांति लाना है। पर्चे का प्रस्तुत भाग राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के अंतरसंबंधों पर प्रकाश डालता है । यह उन तरीकों का अन्वेषन भी प्रस्तुत करता है जिनसे एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) का कार्यान्वयन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उल्लिखित उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान देगा। और आईटीईपी कैसे शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करके और नई शिक्षण विधियों के उपयोग को सुविधाजनक बनाकर इस उद्देश्य को प्राप्त करेगा। इन सभी मुद्दों के विश्लेषण को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं : -

1) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम एक चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम प्रदान करता है जो विषय विशेषज्ञता को शैक्षणिक प्रशिक्षण के साथ जोड़ता है, यह गारंटी देता है कि भावी शिक्षकों के पास कुशल शिक्षण विधियों के साथ-साथ उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों की गहन समझ हो । असाधारण निर्देश प्रदान करने में सक्षम कुशल और आत्मविश्वासी प्रशिक्षकों को विकसित करने के लिए दोनों पहलुओं पर एक साथ ध्यान केंद्रित करने की क्षमता महत्वपूर्ण है।
2) यह कार्यक्रम शिक्षकों को निरंतर प्रतिक्रिया और सहायता प्रदान करने के लिए निरंतर मूल्यांकन और व्यावहारिक प्रशिक्षण को अपनी रूपरेखा में सम्मिलित करता है, जो उनकी व्यावसायिक उन्नति के लिए आवश्यक है (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2020)। यह रणनीति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास की संस्कृति को बढ़ावा देना है।
3) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य गुणवत्ता आश्वासन के लिए साझा मानदंड और मानक विकसित करके पूरे भारत में शिक्षक शिक्षा में एकरूपता प्रदान करना है। इस मानकीकरण का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में विसंगतियों को दूर करना और पूरे देश में शिक्षक तैयारी के लगातार उच्च स्तर की गारंटी देना है (ऐथल और ऐथल, 2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी देश में शिक्षक शिक्षा में एकरूपता को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है एवं इसके संबंध में कुछ अर्थपूर्ण निर्देश भी देती है ।
4) इस कार्यक्रम की बहु-विषयक शिक्षा की प्रमुख अवधारणा भावी शिक्षकों को कई विषयों की व्यापक समझ प्राप्त करने और आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान में अपनी क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम बनाती है। समग्र शिक्षा मॉडल प्रशिक्षकों को प्रेरक और कुशल शिक्षण वातावरण स्थापित करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थियों के व्यापक विकास को बढ़ावा मिलता है । आईटीईपी में शिक्षकों के व्यापक प्रशिक्षण का प्रावधान सम्मिलित है, जिससे उन्हें विकलांग और हाशिए की पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों सहित अन्य विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए आवश्यक योग्यताएँ प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सके (जैन, 2021)। समावेशिता पर जोर सभी बच्चों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है।
5) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का एक उद्देश्य प्रशिक्षकों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से उपयोग करने इसके बारे में में कुशल रूप से शिक्षित करना है। जिसके अंतर्गत शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में डिजिटल उपकरणों और संसाधनों को सम्मिलित करना शामिल है (मेहता और कपूर, 2020)। शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर विशेष ध्यान देने का विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है।
6) यह कार्यक्रम अनुभवात्मक और छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों के उपयोग को बढ़ावा देता है, जिसमें रटने आधारित सीखने पर निर्भर रहने के बजाय इंटरैक्टिव और आकर्षक शैक्षणिक दृष्टिकोण पर निर्भरता विकसित करन सम्मिलितहैं । यह परिवर्तन विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।
7) एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का प्राथमिक ध्यान भारतीय शिक्षा प्रणाली में आकलन और मूल्यांकन की एक अर्थपूर्ण व्यवस्था के विकास करने पर है। यह कार्यक्रम ऐसी समकालीन मूल्यांकन विधियों के उपयोग का समर्थन करता है जो सतत एवं समग्र मूल्यांकन को प्राथमिकता देती हैं। ये तकनीकें छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को समझने और संबोधित करने के लिए आवश्यक हैं (चक्रवर्ती और जयकृष्णन, 2020)। मूल्यांकन पर विशेष ध्यान देना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य के साथ संरेखित है ताकि अधिक गहन सीखने की सुविधा के लिए मूल्यांकन प्रणाली को नया रूप दिया जा सके।

8. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 करोड़ों भारत वासियों की शैक्षणिक अपेक्षाओं का भार उठाए हुई एक व्यापक शिक्षा नीति है । यह शिक्षा नीति कई मायनों में अपने पूर्व में आई कई शिक्षा नीतियों से अधिक दूरदर्शी एवं समावेशी है जो सम्पूर्ण भारत को एक शैक्षणिक रूपरेखा में पिरोने के लिए प्रतिबद्ध है । हालाँकि भारतीय शिक्षा व्यवस्था के संबंध में यह शिक्षा नीति विस्तृत एवं व्यापक दिशानिर्देश एवं प्रावधान लिए हुए है परंतु शिक्षक-शिक्षा के संबंध में इसका विश्लेषण एवं प्रावधान अति विशिष्ट है । यह नीति शिक्षक-शिक्षा को भारतीय शिक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में देखती है, और मानती है कि इस स्तम्भ की मजबूती भारतीय शिक्षा का भविष्य तय करेगी । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इस महत्वकांक्षी उद्देश्य की पूर्ति के के लिए भारत सरकार एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम लेकर आई है । जब हम इस कार्यक्रम की रूपरेखा और इसके उद्देश्यों को बारीकी से अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि यह प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को पूरा करने के लक्ष्य से बुने गए उद्देश्य है । चाहे शिक्षक-शिक्षा में समावेशन को एक महत्वपूर्ण विचार के रूप में स्थापित करना हो या बहु-विषयक शिक्षा की अवधारणा को सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में संदर्भित करना हो, एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों के आसपास ही अपनी रूपरेखा को बुनता है । एक ओर एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम शैक्षिक प्रौद्योगिकी के कौशलों के विकास को भावी शिक्षकों के लिए एक अनिवार्य योग्यता के रूप में देखता है तो दूसरी तरफ यह कार्यक्रम अनुभवात्मक और छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों के उपयोग को बढ़ावा देने लिए प्रतिबद्ध दिखता है । यह सभी विशेषताएँ भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक गहरे नवाचार के आरंभ की तरफ इशारा करती हैं जिसकी कल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने लगभग हर अध्याय में करती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Aithal, P. S., & Aithal, S. (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences, 5(2), 19-41.

Bhagat, C., & Jha, D. (2020). Funding and Implementation Challenges in National Education Policy 2020. Journal of Educational Policy and Entrepreneurial Research, 7(4), 23-35.

Chakraborty, S., & Jayakrishnan, M. (2020). Teacher Training and Development in the Context of NEP 2020. Journal of Educational Research and Practice, 10(3), 45-58.

Jain, V. (2021). Equity and Inclusion in Indian Education System: An Analysis of NEP 2020. Journal of Social Inclusion Studies, 7(1), 12-25.

Mehta, S., & Kapoor, S. (2020). Bridging the Digital Divide: A Prerequisite for NEP 2020. Indian Journal of Educational Technology, 9(2), 68-80.

Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.

Muralidharan, K. (2020). Implementing National Education Policy 2020: Opportunities and Challenges. Economic and Political Weekly, 55(34), 28-33.

National Council for Teacher Education. (2020). Integrated Teacher Education Programme Guidelines. Government of India.

Sarkar, A. (2020). Teacher Recruitment and Training under NEP 2020. Education Quarterly, 11(1), 36-49